विशेषताओं के अनुसार इस वस्त्र पर ऐसी उत्तम कोई
पुस्तक आज तक प्रकाशित नहीं हुई ।

Tailor of India

हिन्दुस्तान का दर्ज़ी

(रजिस्टर्ड)

आठ भागों में



चौथा भाग

फ्राक पिनी फोर

काटने की साइन्टिफिक (SCIENTIFIC) शुद्ध रीति
सब परिवार, पाठशालाओं, दर्ज़ी-पेशा और
इन्डस्ट्रियल स्कूलों के वास्ते ।

नोट—जिस पुस्तक में कटाई विद्या के नियम साइन्स, ज्यामेटरी व साइन्स अनाटमी द्वारा शुद्ध प्रमाण देकर, न लिखे हुए हों, ऐसी पुस्तक बिना मूल्य भी खरीद न करें; अन्यथा अवश्य ही पछताना पड़ेगा ।

लेखक व प्रकाशक
देवीचन्द टेलरिंग एक्सपर्ट,
इण्डियन टेलरिंग कालेज, होशियारपुर (पंजाब) ।

प्रथम बार १०००] [मूल्य ॥)

फ्राक काटने की रीतियां ।

फ्राक की लम्बाई का नाप (देखो चित्र नं० १ व २)

बालक को पहिले खड़ा करके फिर गरदन के पास नं १ की जगह पर इञ्चटेप अर्थात गज को रख कर नं० २ या नं० ३ तक इच्छानुसार लम्बाई का नाप प्राप्त करें। जैसे चित्र नं० १ व २ में पिनीन्सीफोर और फ्राक की लम्बाई प्रकट करती है।

छाती का नाप (देखो चित्र नं० ३)

छाती का नाप लेने के समय यह ध्यान रखना चाहिये कि बालक की दोनों भुजायें (बाजू) नीचे की ओर को लटकती रहें, फिर नं० १ व २ की जगह पर छाती के चारों ओर इञ्च-टेप को फेर कर यह नाप बड़ी सावधानी से प्राप्त करें। जैसे चित्र नं ३ से प्रकट है।

गर्दन का नाप (देखो चित्र नं० ४)

गरदन का नाप लेते समय बालकों की अपेक्षा बड़े आद-मियों में यह ध्यान अवश्य रखें कि गाहक ने पीछे की ओर को अपनी गरदन अकड़ाई तो नहीं है ? यदि है, तो गाहक को इस बात से रोक कर गरदन की गोलाई का नाप सावधानी से प्राप्त करें।

भुजा (आस्तीन) का नाप (देखो चित्र नं० ५)

इस नाप में इञ्चटेप को पीठ के ऊपर ओर के बीच रख कर भुजा की चोटी के ऊपर से लाकर कलाई की हड्डी अर्थात हाथ तक नापें। जैसे चित्र नं० ५ से प्रकट है।

इञ्चटेप और गज़

सवा दो इञ्च का १ गिरह	सवा बीस इञ्च का ९ गिरह
साढ़े चार इञ्च का २ गिरह	साढ़े बाईस इञ्च का १० गिरह
पौने सात इञ्च का ३ गिरह	पौनेपच्चीस इञ्च का ११ गिरह
नौ इञ्च का ४ गिरह	सत्ता इस इञ्च का ११ गिरह
सवा ग्यारह इञ्च का ५ गिरह	सवाउनतीस इञ्च का १३ गिरह
साढ़े तेरह इञ्च का ६ गिरह	साढ़े इकत्तीस इञ्च का १४ गिरह
पौनेसोलह इञ्च का ७ गिरह	पौने चौंतीस इञ्च का १५ गिरह
अठारह इञ्च का ८ गिरह	छत्तीस इञ्च का एक गज़

बालकों के नाप

आयु	छाती	भुजा (आस्तीन)	गरदन	लम्बाई फ्राक
६ महीना	१८	११$\frac{1}{2}$	८	१८
१ वर्ष	२०	१३	१०	२०
डेढ़ वर्ष	२१	१३$\frac{1}{2}$	१०$\frac{1}{2}$	२१
२ वर्ष	२२	१४	११	२२
३ वर्ष	२४	१५	१२	२३

आगे की ओर का तीरा काटने की रीति (देखो चित्र नं० ६)

नाप—मान लो छाती की गोलाई २० ई०, फ्राक की लम्बाई २० ई०, गरदन साढ़ेदस ई०, भुजा (आस्तीन) की लम्बाई १४ ई०,

नोट—रेखा नं० से ५ तक कपड़े को दूहरा करके दिखाई गई है लम्बाई में सीधी रेखा छाती की गोलाई का पांचवां भाग

बराबर ४ ई० नं० से नं २ तक चौड़ाई में सीधी रेखा छाती की गोलाई का चौथा $\frac{1}{4}$ भाग बराबर ५ ई० नं० से नं १ तक गरदन की गोलाई का छटा $\frac{1}{6}$ भाग बराबर पौने दो १$\frac{3}{4}$ ई० नं० से नं ४ तक गरदन का पांचवां भाग जमा चौथाई ई० बराबर सवा दो २$\frac{1}{4}$ ई० नं ५ से नं ६ तक छाती का चौथा भाग नफी आधा $\frac{1}{2}$ ई० बराबर ४$\frac{1}{2}$ ई० नं २ से नं ३ तक कन्धों के ढाल के अनुसार एक ई० फिर नं ४, १, ३, ६, ५ के स्थान से काट कर तीरा तैयार करें।

पीठ की ओर का तीरा काटने की रीति (देखो चित्र नं ७)

नं ० से नं ५ तक लम्बाई में सीधी रेखा चित्र नं ६ के तीरे के बराबर ४ ई० नं ० से नं ७ तक और नं ५ से नं ८ तक काज और बटनों के लियें दबा समेत पौना $\frac{3}{4}$ ई० नं ० से नं १ तक गरदन की गोलाई की छटा भाग बराबर पौने दो १$\frac{3}{4}$ ई० नं०से नं २ तक छाती की गोलाईका चौथाई भाग बराबर ५ ई० नं २ से नं ३ तक कन्धों के ढाल के अनुसार एक इञ्च नं ५ से नं ६ तक छाती की गोलाई का चौथा भाग नफी आधा ई बराबर साड़े चार ४$\frac{1}{2}$ ई० फिर नं ७, ०, १, ३, ६, ५, ८ के स्थान से काट कर दो टुकड़े तीरे के तैयार करें जैसे चित्र नं ७ मे प्रमाणित रखायें प्रकट करती हैं।

अधिक लम्बाई तीरा काटने की रीति (देखो चित्र नं ८)

नोट—नं ० से ५ तक लम्बाई में सीधी रेखा छाती की गोलाई का चौथा भाग जमा एक ई० बराबर ६ ई० कपड़े को दूहरा करके दिखाई गई है, नं ० से २ तक छाती का चौथा

भाग बराबर ५ ई० नं ० से एकतक गरदन की गोलाई का छटा भाग बराबर पौने दो ई० न० से ४ तक गरदन का पाचवां भाग जमा चौथाई ई० बराबर सवा दो ई०, नं २ से ३ तक कन्धों के ढाल के अनुसार एक ई० नं ० से न १३ तक छाती का चौथा भाग बराबर ५ ई०

नोट—यदि बच्चा पतला और लम्बा हो तो न ० से १३ तक जो संख्या है उसको ५ ई० की जगह छः ई० नियत करें नं १३ से नं ८ तक छाती का चौथा भाग जमा एक ई० बराबर ६ ई० नं १३ से नं १० तक छाती का चौथा भाग नफ़ी आधा ई० बराबर साढ़े चार ई० नं ० से १२ तक छाती का बाहरवां $\frac{1}{24}$ भाग बराबर १$\frac{1}{2}$ ई० न १० से ११ तक रेखा न ९ व १० का आधा भाग बराबर पौना $\frac{3}{4}$ ई०, नं ५ से ६ तक रेखा नं १३ व ८ के बराबर ६ इ० फिर रेखा नं ४,१,३,१२,११,६,६, ५ के स्थान से काट कर आगे की ओर का तीरा तैयार करें।

पीठ की ओर का तीरा काटने का नियम(देखो चित्र नं ६)

न० से ५ तक लम्बाई में सीधी रेखा चित्र नं ८ के तीरे के बराबर ६ इ० नं ० से ७ तक और नं ५ से आठ तक काज और बटनों के लिये दबा सहित पौना इ० नं ० से २ तक छाती का चौथा भाग बराबर ५ ई०, नं २ से नं ३ तक कन्धों के ढाल के अनुसार एक ई०, नं ५ से ६ तक छाती का चौथा भाग जमा एक ई०, बरावर ६ ई०, नं० से एक तक गरदन का छठा भाग बराबर पौने दो १$\frac{3}{4}$ ई०, शेष संख्याएँ और रीतियां वही हैं जो चित्र नं ८ में बता चुके हैं फिर नं ७, ०, १, ३, ९, ६, ५, ८ के

स्थान से दो टुकड़े काट कर तैयार करें जैसे चित्र नं ९ में प्रमाणित रेखायें प्रकट करती हैं।

फ्राक के नीचे का भाग काटने की रीति (देखो चित्र नं१०)

नोट—नं ० से नं ३ तक लम्बाई में सीधी रेखा कपड़े को दूहरा करके दिखलाई गई है।

नं ० से नं० तक लम्बाई में सीधी रेखा फ्राक की लम्बाई के अनुसार नफो तीरे की लम्बाई बराबर १६ ई०, नं १ से नं ३ तक भीतर की ओर को लौटने के लिये २ ई०, नं ० से नं २ तक और नं १ से नं ६ तक छाती की गोलाई का आधा भाग बराबर १० ई० यदि कपड़ा अधिक पतला होतो उस संख्या को १० की जगह १२ ई० माने, नं २ से नं ४ तक छाती का बारहवां भाग बराबर पौने दो १$\frac{3}{4}$ ई० नं २ से नं० ५ तक मोंहडे की गहराई के अनुसार एक या डेढ़ १$\frac{1}{2}$ ई०, नं ६ से नं ७ तक रेखा नं १ व नं ३ के बराबर दो ई०, फिर नं ०, ४। ५, ६, ७, ३ के स्थान से काट कर नीचे का भाग तैयार करें, यदि ऊपर का तीरा लम्बाई में अधिक हो तो नीचे का भाग नं ० नं २ की जगह रेखा न ८, ९ के स्थान से काट कर तैयार करें। चित्र न १० में नं ०, ४, ५, ९ या ८, ९ प्रमाणित तथा विन्दु वाली रेखायें प्रकट करते हैं।

भुजा (आस्तीन) काटने की रीति (देखो चित्र नं ११)

नोट चित्र नं ११ में रेखा नं , २ कपड़े को दूहरा करके दिखलाई है नं ० से नं १ तक तीरे की लम्बाई ५ ई० के साथ

भुजा रख कर दिखलाई गई है, नं १ से नं २ तक भुजा की लम्बाई ९ इँच नं १ से ३ तक दो से ४ तक भुजा ढील रखने के लिये आवश्यकतानुसार १ ई० यह एक ई० की संख्या कुछ आवश्यक नहीं है परन्तु रिवाज के अनुसार रक्खी जाती है। यदि भुजा को अधिक खुला न रखना हो तो रेखा नं १ व २ की जगह रेखा न ३, ४ पहिले नियत करें नं ३ से नं ८ तक और नं ४ से ५ तक छाती की गोलाई का चौथा भाग बराबर ५ ई०। नं ८ से नं ७ तक छाती की गोलाई का बारहवां भाग बराबर पौने दो ई० नं ५ से ६ तक साधारण नियम एक ई० फिर नं १, १०, ७, ६, ४, २ के स्थान से काट कर तैयार करें जैसे चित्र नं ११ में प्रमाणित रेखायें प्रकट करती हैं।

नोट केवल भुजा के भाग की ओर रेखा नं ७,६,१ के स्थान से काट कर तैयार करे, नं १० से नं ६ तक साधारण नियम एक ई०

कालर काटने की रीति (देखो चित्र नं १२,१३)

नोट—कालर काटने के समय पहिले कन्धों के स्थान की दोनों सीने डाल लेनी चाहिये, फिर कालर के कपड़े को तीरे के कपड़े के ऊपर रख कर रेखा नं ७, ४, २ के स्थान से काट दें।

नं ० से नं १ तक पीछे की ओर से तिरे की लम्बाई है, नं २ से नं ३ तक गरदन के आगे की ओर से तीरे की लम्बाई है रेखा नं ४ नं ५ कन्धों की सानों के चिन्ह को प्रकट करती है। नं ० से नं ७ तक काज और बटनों के लिये आधा ई० नं ७ से ८ तक कालर के नोक की लम्बाई नियमानुसार २ ई० नं ४ से

६ तक कालर की नोक की लम्बाई नियमानुसार २½ ई० । नं २ से नं ६ तक आगे की ओर से कालर की नोक की लम्बाई नियमानुसार २ ई० । नं ९ से नं ३ तक साधारण नियम एक ई० । नं ८ से १२ तक साधारण नियम डेढ़ ई० फिर ७, ८, ६, ९, २ के स्थानसे केवल ऊपर के भाग के कपड़े को काट कर तयार करें जैसे चित्र नं १२ व १३ में प्रमाणित रेखायें प्रकट करती हैं ।

दूसरे फैशन का कालर काटने की रीति (देखो चित्र नं १४, १५)

नं ०से ७ तक काज और बटनों के लिये आधा ई० ।नं ० से १ तक पीठ की ओर से तीरेकी लम्बाई है, नं २ से ११ तक आगे की ओर से तीरे की लम्बाई है रेखा नं ४, ५ कन्धों की सिलाई के चिन्ह को प्रकट करती हैं। फिर रेखा नं २, ४, ७ के स्थान के ऊपर को कपड़ा रखकर कालर काटना आरम्भ करें। नं ७ से ८ तक और २ से ९ तक नियमानुसार १ ई०, न ७ से ८ तक और ८ से ६ तक नियमानुसार २ ई० नं २ से ९ तक और ९ से ३ तक नियमानुसार २ ई० नं ४ से १० तक नियमानुसार डेढ़ ई०, नं ९ से ११ तक डेढ़ ई० नं ८ से १२ तक २ ई० फिर रेखा नं० ७, ८, ६, १०, ३, ९, २ के स्थान से काट कर कालर तैयार करें जैसे चित्र नं १४, १५ में प्रमाणित रेखायें प्रकट करती हैं।

तीसरे फैशन का कालर काटने की रीति (देखोचित्र १६, १७)

नं ११ से ९ तक सवा ई० नं १२ से आठ तक पौने दो ई०,

नं ७ से ८ तक और २ से नं ६ तक नियमानुसार ढाई $2\frac{1}{2}$ ई० नं ४ से ६ तक और १० से ३ तक नियमानुसार ढाई $2\frac{1}{2}$ ई०, नं ९ से नं ३ तक गोलाई नं ८, ६, ३, ६ का तीसरा भाग, नं ३ से ६ तक रेखा नं ९, ३ के बराबर नं ६ से ८ तक रेखा नं ६, ३ के बराबर फिर कालर रेखा नं ७, ८, ६, ३, ९, २ के स्थान से काट कर तैयार करें जैसे चित्र नं १६, १७ में प्रमाणित रेखायें प्रकट करती हैं

फ्राक को कपड़ा लगाने की रीति (देखो चित्र नं १८)

नोट—रेखा नं ० से नं २७ तक कपड़े की लम्बाई को दूहरा करके दिखलाई गई है नं १ के स्थान से पेश और पीठ नं २, ३, ४ के स्थान के ऊपर के भाग में से पेश और पीठ का तीरा, नं ७, ४, २ के नीचे के टुकड़े में से कालर नं ५, ६ के स्थान से भुजा (आस्तीन) काट कर फ्राक तैयार करे

नियम—तीरे की ऊचाई को छोड़कर पेश की लम्बाई को दो के साथ गुणा करके फिर भुजा की लम्बाई को जोड़ कर जो उत्तर मिले उतना कपड़ा लगेगा

उदाहरण—मान लो पेश की लम्बाई २० ई० भुजा की लम्बाई १० ई० (२० × २ + १०) ÷ ३६ एक गज १४ ई० कपड़ा लगेगा आगे इसी प्रकार

नोट—यह नियम तब काम में लावें जब कपड़े का अर्ज

तीरा की ऊंचाई और दो भुजाओं की चौड़ाई के बराबर हो।

क्रम—दो भुजाओं की चौड़ाई २३ ई०, तीरे की ऊंचाई ४ ई० (२३+४)= २७ ई० कपड़े का अर्ज है जैसे चित्र नं १८ में ईंचटेप के निशान प्रकट करते हैं।

फ्राक को कपड़ा लगाने की दूसरी रीति (देखो चित्र नं. १९)

नं १ की जगह से पीठ और पेश, नं २ की जगह से भुजा, नं ३ की जगह से आगे का तीरा, नं ४, ५ की जगह से पीठ की तरफ से पीठ की तरफ के दो तीरे, नं ३, ४, ५ की जगह के नीचेके टुकड़ेमें से कालर काटकर फ्राक तैयार करें

नियम—तीरे उचाई को छोड़कर पेश की लम्बाई में तीरे की लम्बाई को जमा करके फिर २ के साथ गुणा करके जो उत्तर मिले उतना कपड़ा लगेगा।

उदाहरण—मान लो पेश की लम्बाई १८ ई० तीरे की लम्बाई १२ ई० (१८+१२)×२÷३६ एक गज २४ ई० कपड़ा लगेगा।

नोट—यह नियम तब काम में लावें जब कपड़े का अर्ज पेश के घेरे की चौड़ाई के बराबरहो जैसे चित्र नं १९ में इंचटेप के चिन्ह प्रकट करते हैं, पेश के घेरे की चौड़ाई २० ई० जिसके बराबर कपड़े का अर्ज २० ई०

फ्राक को कपड़ा लगाने की तीसरी रीति (देखो चित्र २०)

न १ की जगह से पेश और पीठ, न २ की जगह से भुजा, नं ३ की जगह से तीरा नं ४ की जगह से पीठ के दो तीरे, नं ५ और नं ३ के नीचे के टुकड़े में से कालर काट कर फ्राक तैयार करें।

नियम--पेश की लम्बाई को दो के साथ गुणा करके जो उत्तर मिले उतना कपड़ा लगेगा यदि पेश की लम्बाई कम हो तो यह नियम काम में लावें आस्तोन की लम्बाई और तीरे की चौड़ाई को दो के साथ गुणा करके जो उत्तर मिले उतना कपड़ा लगेगा

उदाहरण—मान लो तीरे की लम्बाई ११ ई० भुजा की लम्बाई ९ ई० (११ + ९) × २ ÷ ३६ एक गज ४ इ० कपड़ा लगेगा।

नोट—यह नियम तब काम में लावें जब कपड़े का अर्ज पेश के घेरे और भुजा की चौड़ाई के बराबर हो।

क्रम—मान लो भुजा की चौड़ाई १० इंच, घेरे की चौड़ाई २० इंच (१० + २०) = ३० इंच कपड़े का अर्ज़ हैं जैसे चित्र नं २० में ईश्चटेप के चिन्ह प्रकट करते हैं।

घेरा सीने की रीति (देखो चित्र नं० २१)

नं २ से ९ तक और १० से नं ११ तक पहिले सीन डाल दें फिर नं २ की जगह को नं ३ की ओर उलटा

कर तुरपाई या बखिया करें नं० १ से २ तक नियमानुसार २ इंच फिर नं ३, ४, ५ और ६, ७, ८ के स्थान पर बारीक २ बखिया करके प्लेट पैदा करें या इन चिन्हों के स्थान पर कोई डोरी लगाएँ जैसा कि आजकल रिवाज है।

देखो चित्र नं० २२—या नं १ और ३ के बीच बिडिंग या फीता किसी तरह का लगाएं जैसा कि साधारण नियम है।

नोट—चित्र नं २२ में रेखा १, ४ और ४, ५ की जगह घेरे के कपड़े को दूहरा करके दिखलाया गया है।

देखो चित्र नं २३—कभी २ घेरे के नीचे लहेस लगा कर या कपड़े को काट कर घेरे के नीचे ऐसी खूबसूरती को पैदा करें जैसे चित्र नं २३ में गोलाई दार रेखा नं ० से २० तक प्रकट करती है।

तीरा लगाने की रीति (देखो चित्र नं० २४)

नं २, ३ ४, ५, ६ और १, ७, ८, ९, १० के स्थान पर प्लेट पैदा करके फिर नं ११ व नं० १२ के स्थान का तीरे का टुकड़ा ऊपर रखकर नीचे अन्दरस का टुकड़ा रखकर रेखा १०, ६ की जगह पर मशीन का बखिया करें जैसे चित्र २४ से प्रकट है।

तैयार किए हुए तीरे की तसवीर (देखो चित्र २५, २६, २७

चित्र नं २७ में पेश के कपड़े को भीतर की ओर को एक

या डेढ़ इंच के बराबर लौटा कर फिर गोलाई में नं १, २, ३, ४, ५, ६, ७, ८ की भांति कच्चा करके रेखा नं २७, २८ के स्थान पर डोरी लगावें या मशीन का बखिया करें जैसे चित्र नं २७ से प्रकट है।

पीठ की ओर के तीरे लगाने की रीति (देखो चित्र नं० २८)

नं ३ व नं ४ के स्थान से तीरे उसी रीति से लगावें जैसे हम पेश के सम्बन्ध में चित्र नं० २४ से २७ तक बतला चुके हैं। नं १ से नं २ तक गिरेबान की लम्बाई छाती के नाप का चोथा भाग जमा २ इंच बराबर ८ इंच यदि पिन्नीफोर है तो नं १ से ५ तक काट कर पिन्नीफोर तैयार करें।

नोट—पिन्नीफोर की आस्तीनें नहीं हुआ करती जैसे चित्र नं २ में दिखाया गया है। यदि फ्राक तैयार कर रहे हो तो नं १ व २ के बीच फास्नर अर्थात स्टिच बटन ( ) पांच या सात लगावें जैसे कि आज कल नियम है।

बिब काटने की रीति (देखो चित्र नं २९)

नाप—मान लो गरदन की गोलाई १०½ साढ़े दस ई० जमा डेढ़ ई० बराबर १२ ई०

नं ० से १ तक गरदन की गोलाई का छटा भाग बराबर २ ई० नं ० से २ तक गरदन की गोलाई का पांचवां $\frac{1}{5}$ भाग जमा चौथाई ई० बराबर पौने तीन २¾ ई०।

नं ० से ३ तक गरदन की गोलाई का आठवां भाग बराबर डेढ़ ई० नं ० से ४ तक नियमानुसार ६ या सात ई० ।

फिर बिब को सुन्दरताई के लिये बाहर की ओर से सीधी या गोलाई वाला चित्र उत्पन्न करें जैसे नं ४, ५, ३ गोलाई वाली रेखाएं प्रकट करती है ।

भुजा (आस्तीन) सीने की रीति (देखो चित्र नं ३०)

नं ३ से ४ तक कफ की चौड़ाई छाती के नाप का पांचवां भाग जमा २ ई० बराबर ६ ई०

नं १ से २ तक भुजा (आस्तीन) के कपड़े में प्रसूज डाल कर कफ कपड़े के साथ लगावें ।

नं १ से ४ तक और २ से ३ तक कफ की चौड़ाई एक ई०

नोट—रेखा नं ३, ४ कपड़े को दूहरा करके दिखलाई गई है ।

दूसरे फैशन का कफ (देखो चित्र नं ३१)

नं १ से २ तक भुजा के कपड़े में प्रसूज डाल कर फिर कपड़े को इकठा करके नं १ व २ के स्थान के ऊपर डोरी लगावें जैसा कि आज कल नियम है ।

नं १ से २ तक डोरी की लम्बाई छाती की गोलाई का पांचवां भाग जमा २ ई० बराबर ६ ई०, नं २ व ४ के स्थान पर लैस लगावें या कपड़े को भीतर की ओर को लौट कर मशीन का बखिया करें फिर नं ५, १, ३ के स्थान से दोनों किनारों को इकठा करके सीन डाल दें ।

कालर लगाने की रीति (देखो चित्र नं ३२)

नं १, २, ३, ४, ५, ६ के स्थान गरदन पर कालर को कच्चा करके फिर ऊपर एक उरेब टुकड़ा जिसकी चौड़ाई १ ई० लम्बाई गरदन के नाप से एक ई० अधिक हो उसे ऊपर रख कर मशीन का बखिया करें फिर ओरेब टुकड़ा भीतर की ओर को लौटा कर तुरपाई करें जैसा कि सिलाई का साधारण नियम है।

पेश और पीठ के साथ भुजा लगाने की रीति (देखो चित्र नं ३३)

बिन्दु नं १ पेश के मोहडे की गोलाई के आगे के ओर स्थित है बिन्दु नं २ भुजा की सीन के आगे की ओर स्थित है।

फिर बिन्दु नं २ को बिन्दु नं १ के साथ लगावें और नं ४ के स्थान से कपड़े को नरम करके नं ३ के साथ लगावे जैसा कि सिलाई का नियम है।

ज्यूमेट्री (रेखा गणित) के चित्र और उनका प्रयोग

कटिंग की नीव (बुनियाद) (देखो चित्त नं ३४, ३५, ३६)

चित्र नं ३४ व ३५ में रेखा नं १,२ गरदन का लैटरिल डाईमिटर (Diametre) है जिसके बराबर चित्र नं ३६ में तीरे की गरदन का डाईमिटर है। साईसं ज्यूमेट्री (रेखा गणित) में किसी सरकुल (Circle) अर्थात् वृत में डाईमिटर अर्थात्

व्यास $\frac{२२}{७}$ या $\frac{३५५}{११३}$ माना गया है परन्तु वास्तव में यह सम्बन्ध ठीक नहीं हुआ। इस लिये हमने इस आर्ट अर्थात कला में प्रेक्टीकली (Practically) अर्थात प्रयोगिक इस सम्बन्ध को $\frac{२२}{७}$ की जगह $\frac{२१}{७}$ विद्यार्थियों की सुगमता को दृष्टिगोचर रखते हुए यह नियम नियत कर दिया है। जिस से आगे के लिये सब कटर एक मत रहें और फल शुद्ध प्राप्त कर सकें। और नियम गणित द्वारा ठीक है।

उदाहरण मान लो गरदन की गोलाई १२ ई० जिसका तिहाई भाग बराबर ३ ई० डाईमिटर अर्थात व्यास का नाप है जिसे दर्ज़ी तीरे के बीच का भाग या टीक या किस्त कहा करते हैं।

गरदन के आगे का भाग (देखो चित्र ३५, ३७, ३८)

चित्र नं ३५, ३८ में विन्दु नं १ व २ गरदन की साइडों (Sedes) पर स्थित हैं। बिन्दु नं ४ गरदन के आगे के अन्तिम भाग पर स्थित है। विन्दु नं ० गरदन के केन्द्र में स्थित है। बहुत से लोग गरदन के आगे के भाग को सैमी सरकुल (Semi Circle) अर्थात वृत के रूप में मानते हैं परन्तु यह भाग वास्तव में कर्व ईलिपस (Curvellipse) अर्थात अण्डे के रूप में है इसके आगे और पीछे के रेडाई (Radii) कम व अधिक हैं जैसे चित्र नं ३५ व ३७ में नं ० से नं ३ तक नं ० से नं ४ तक बिन्दु वाली रेखायें प्रकट करती हैं इस लिये चित्र नं

३८ में रेखा नं० ४ के नाप की संख्या को नियत करने के लिये गरदन का पाँचवां भाग जमा चौथाई ई०। यह नियम नियत कर दिया गया है जिससे इस पर सब कटर एक मत रहें और आगे बढ़ने के लिये उन्नति कर सकें। इति

देवीचन्द

अधिक जानने के लिये शेष भागों का अवलोकन करें इस पुस्तक को पढ़कर जो आप को सम्मति हो अवश्य ही लिखें।

देवीचन्द

एडीटर साहब अखवार प्रताप लाहौर—

दर्जी कला पर पांच नई पुस्तकें महाशय देवीचन्द ने भेजी हैं। इन के नाम कमीजं, वास्कट, कुर्ता, सिलवार और पाजामा" हैं। इन का विषय इन के नाम से ही प्रकट है। लेखक ने इन बस्तुओं की सिलाई कटाई के नियम बहुत समझा कर लिखें हैं। चित्रों और खाकों के देने से पुस्तक का महत्त्व और भी बढ़ गया है। दर्जी बिद्या से अपरिचित लड़के और लड़कियाँ इन कामों को गुरु के न होते हुए भी सीख सकती हैं। जहाँ तक हमें मालूम है, ऐसी अच्छी पुस्तकें आज तक नहीं बनीं। देश में शिल्प कला की उन्नति के लिये ऐसी पुस्तकों का बनना अति प्रसन्नता का कारण है।



फ़राक

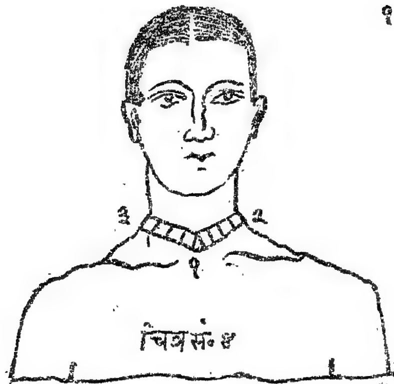


चित्र सं० १

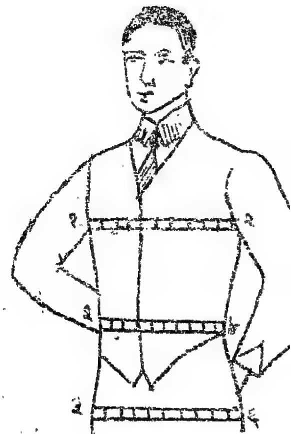
पिनी फ़ोर



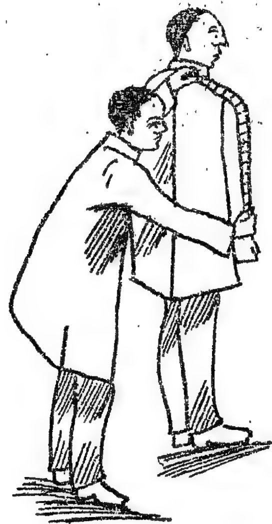
चित्र सं० २

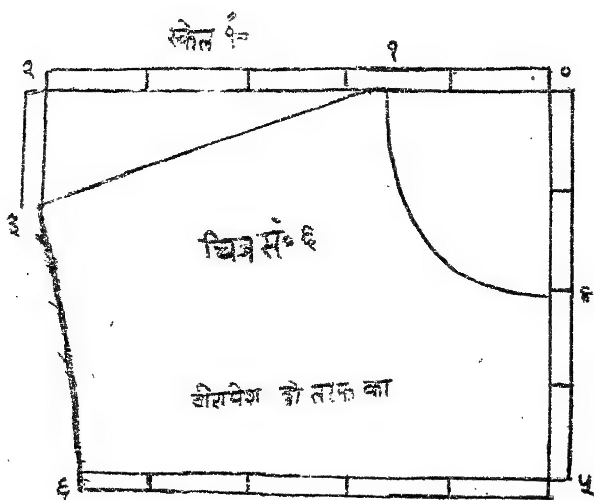


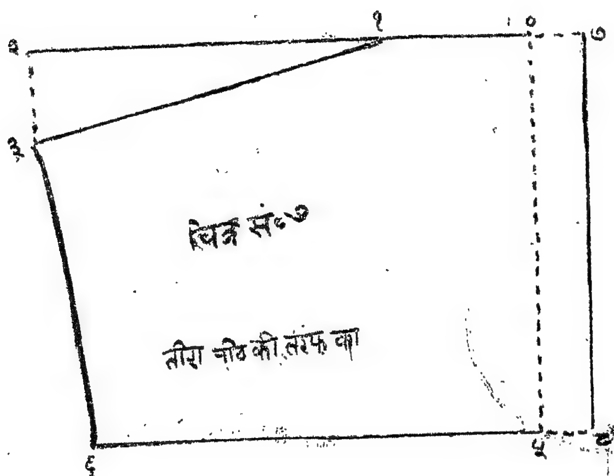
गर्दन की गोलाई का नाप

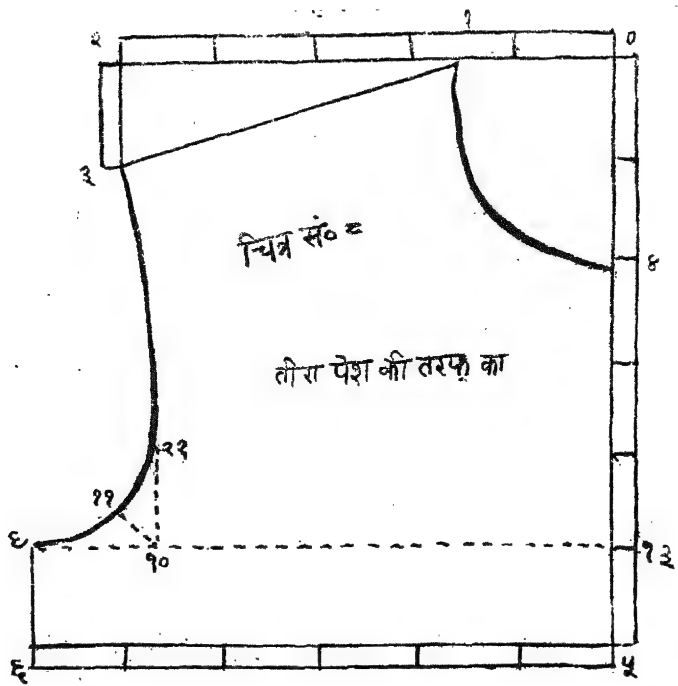


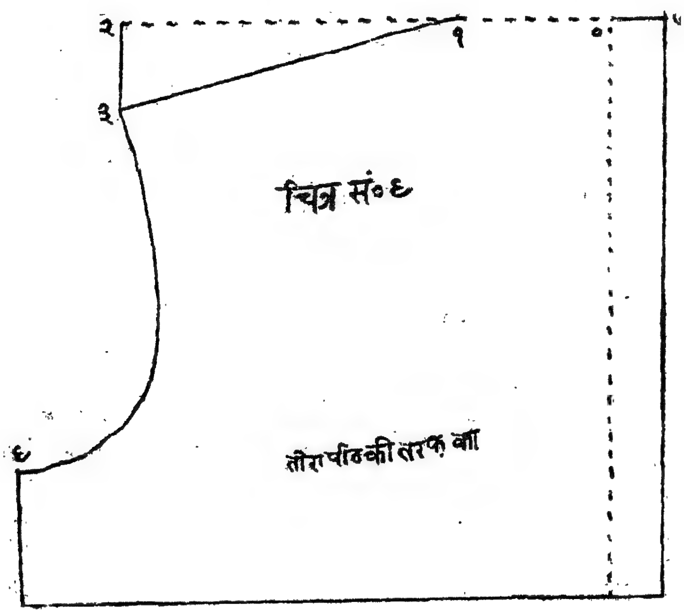
चित्र सं० ३

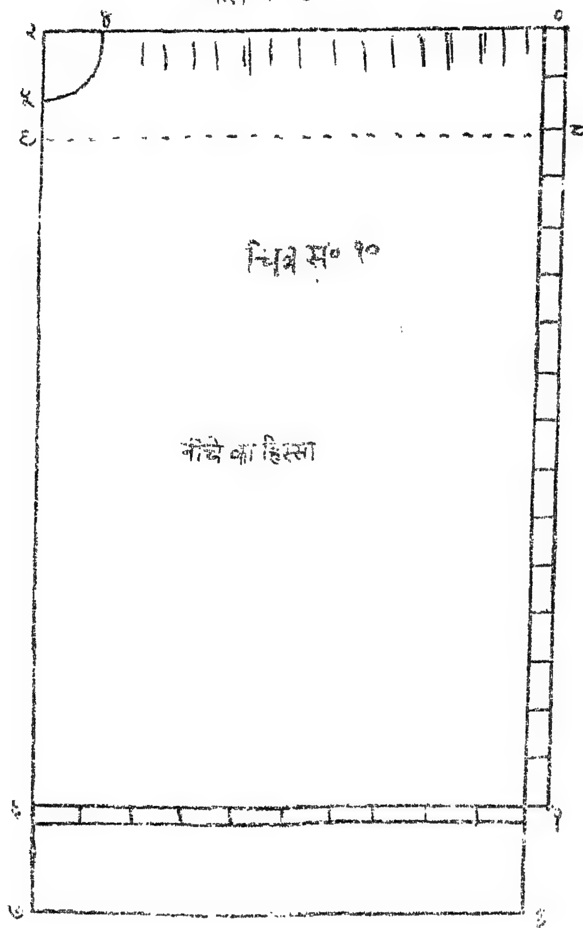



स्केल १''
२
१
०
३
४
५
६
चित्र सं० ६
तीरा पेट की तरफ का

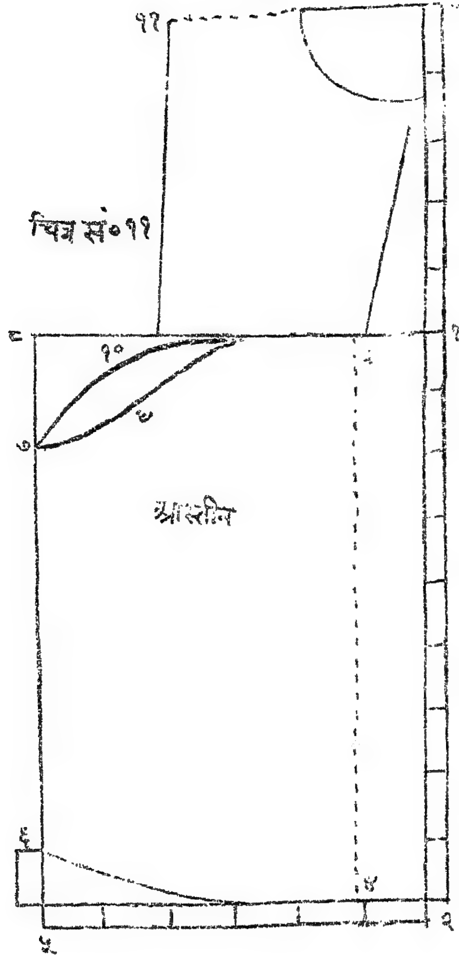

२
१
०
७
३
६
५
८
चित्र सं० ७
तीरा पीठ की तरफ का

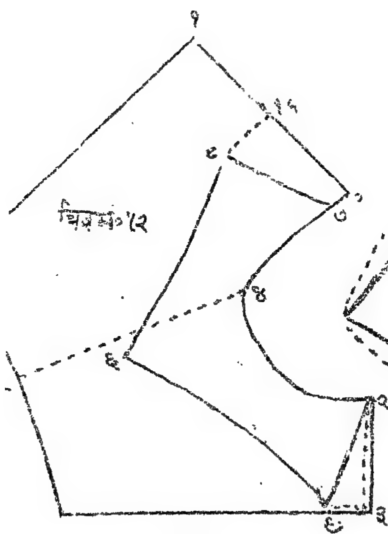

चित्र सं० ८
तीरा पेश की तरफ का

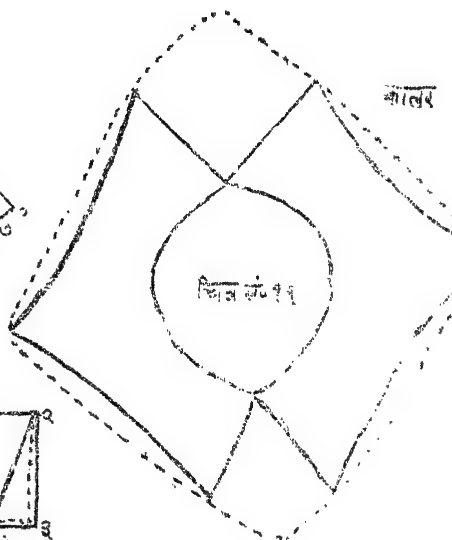

चित्र सं० ६
तीरा पीठ की तरफ का

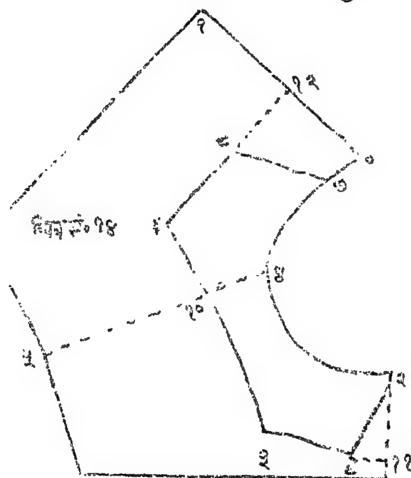

स्केल १" = ४"
चित्र सं० १०
पीछे का हिस्सा

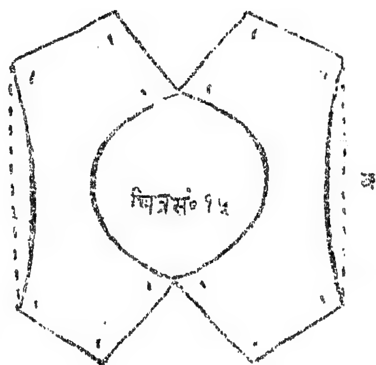
स्केल १" : १"

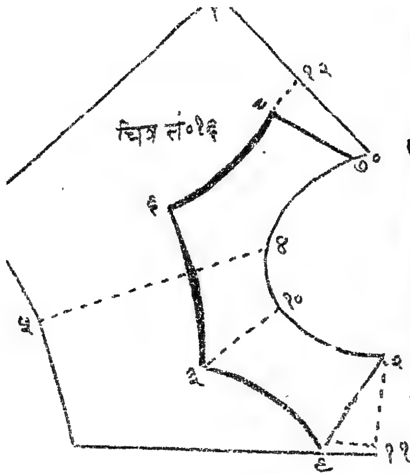


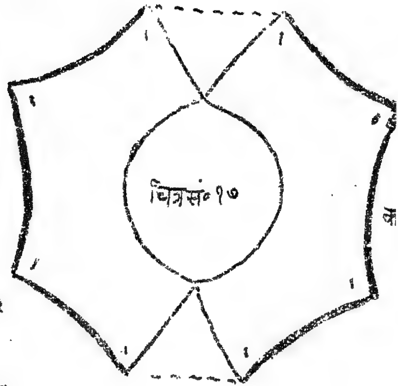

चित्र सं० १२


अस्तर
चित्र सं० १३


चित्र सं० १४


चित्र सं० १५



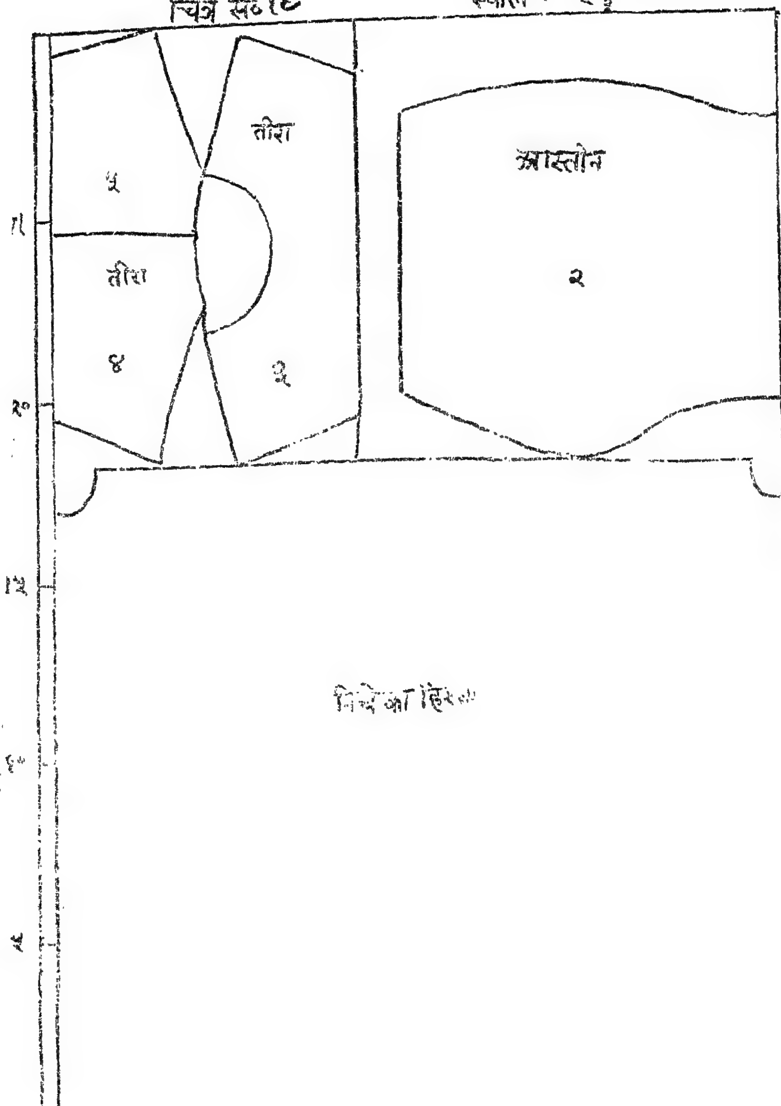


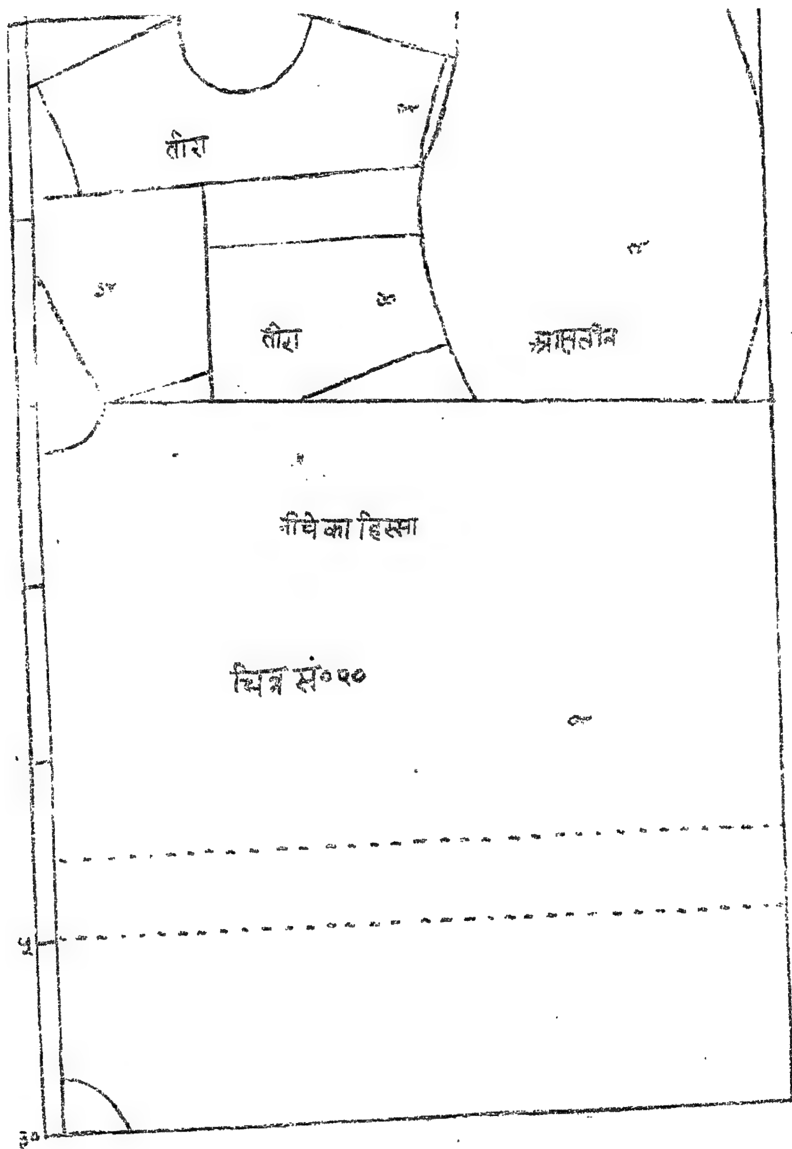
चित्र सं० १८ स्केल १"=८"

आस्तीन ५

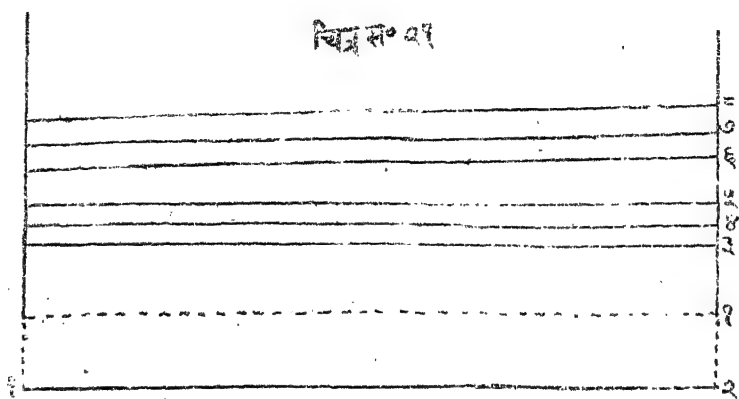
आस्तीन ६

चित्र सं० १६ स्केल १ = ५ $\frac{1}{2}$

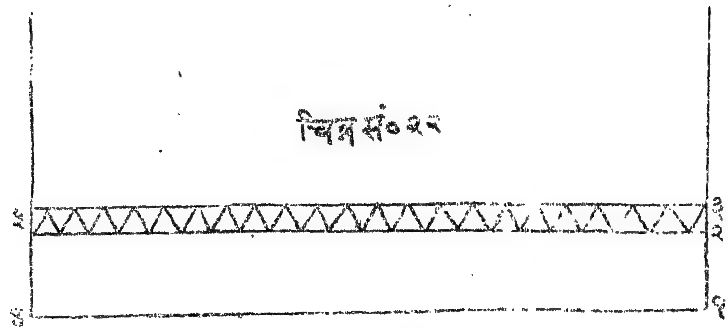




तीरा
तीरा
आस्तीन
नीचे का हिस्सा
चित्र सं० १०

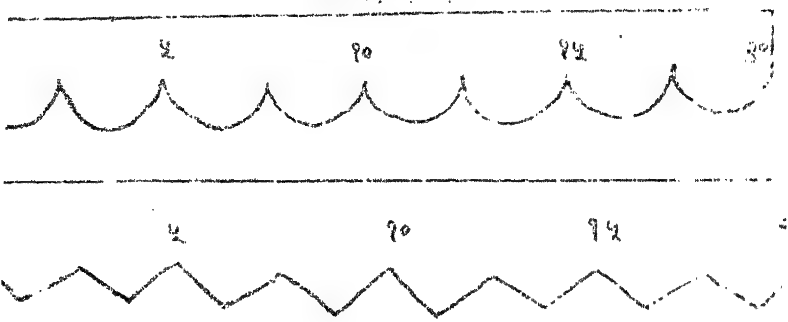


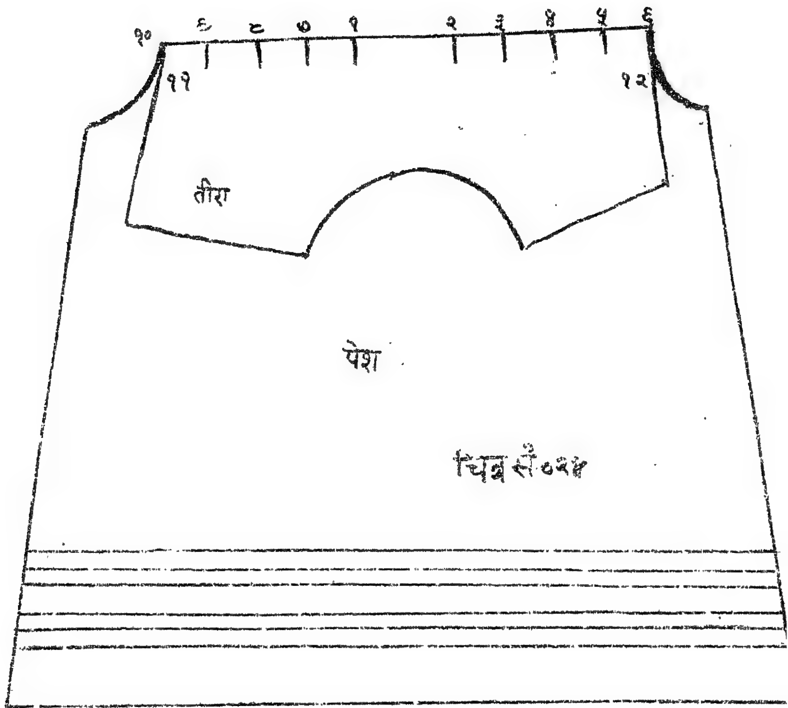
चित्र सं० २१



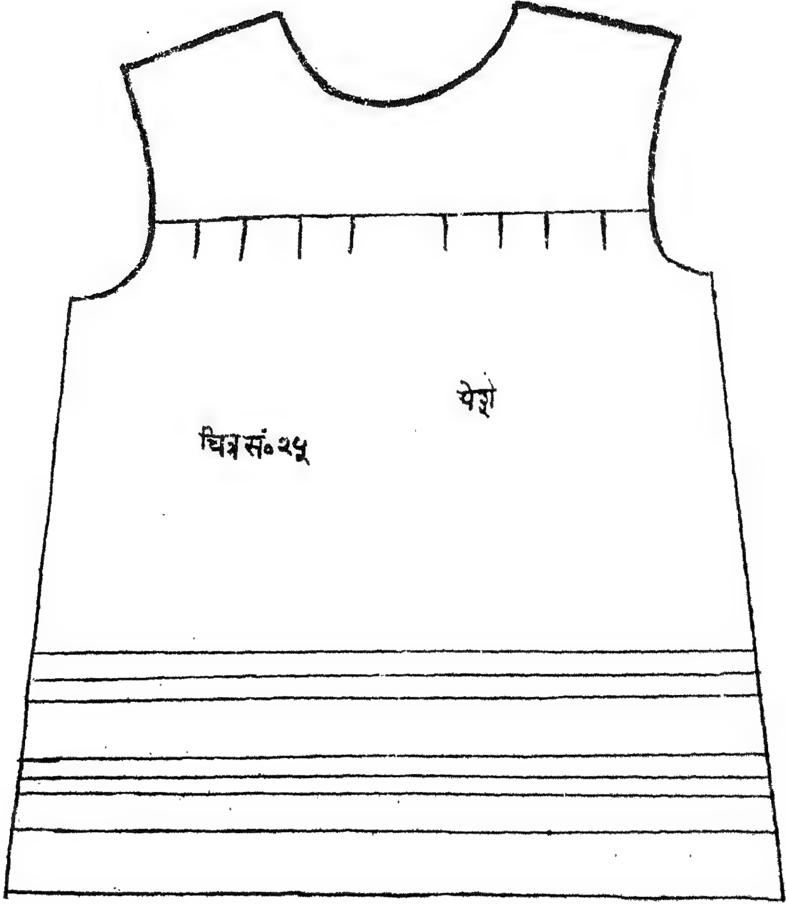
चित्र सं० २२

चित्र सं० २३

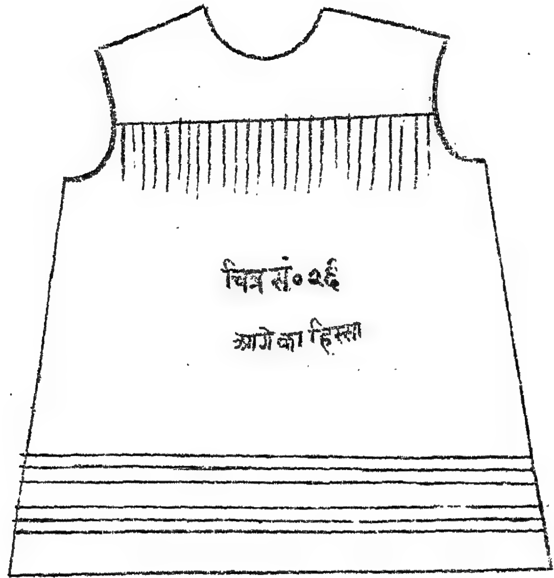


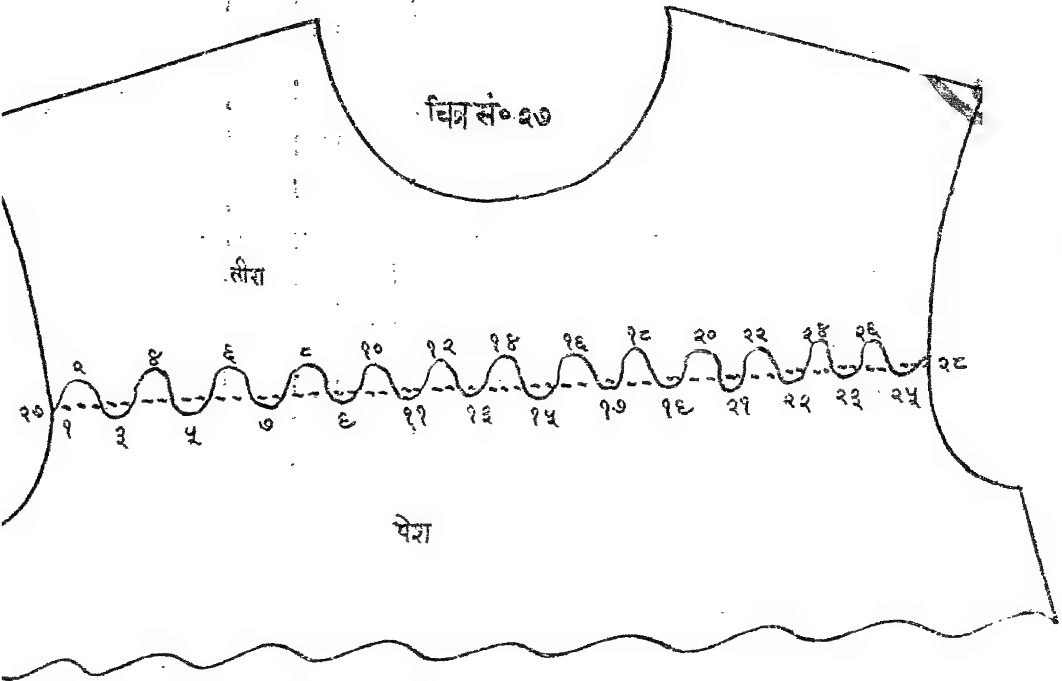


चित्र सं० २४

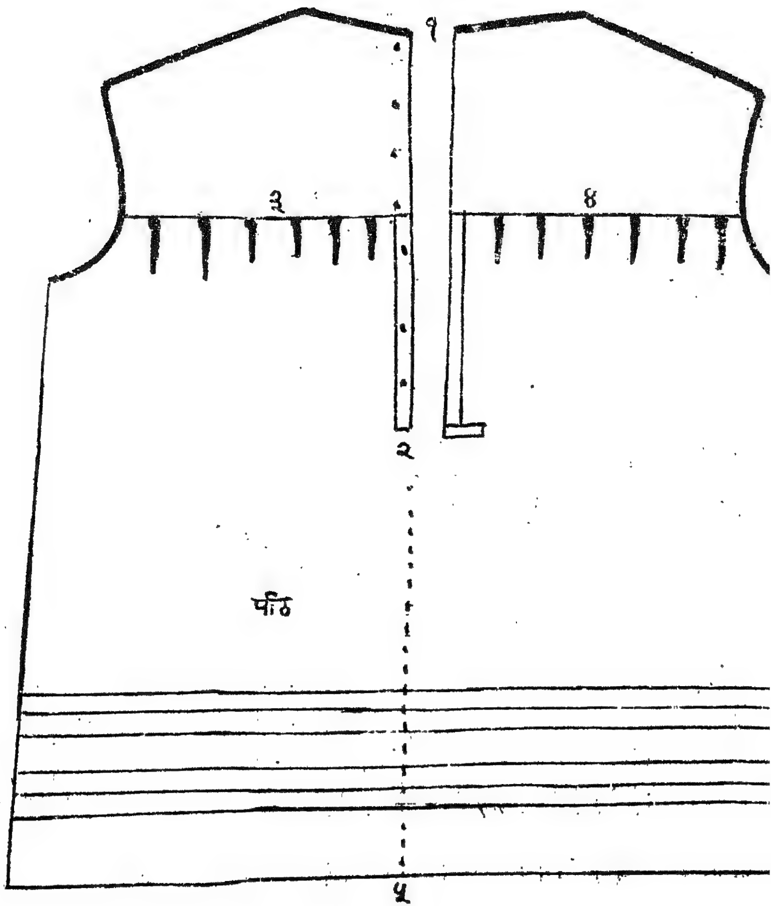


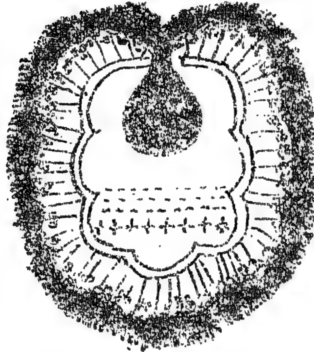
चित्र सं० २५


चित्र सं० २६
आगे का हिस्सा


चित्र सं० ४७
सीना
घेरा

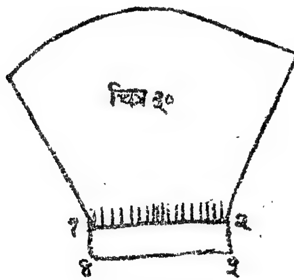
चित्र २८

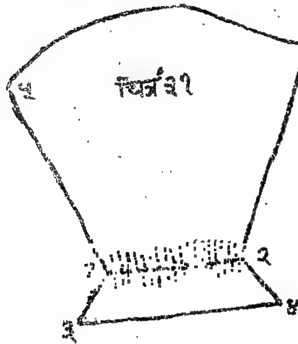


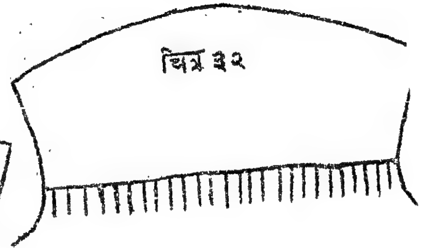


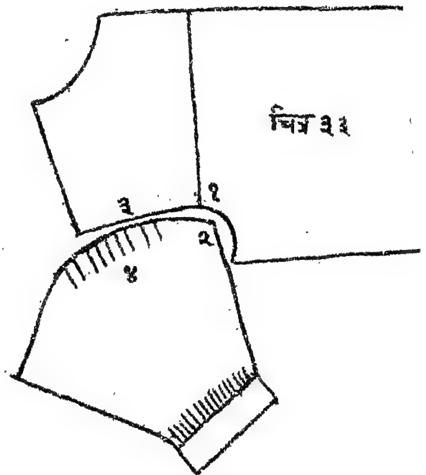
चित्र सं० २८



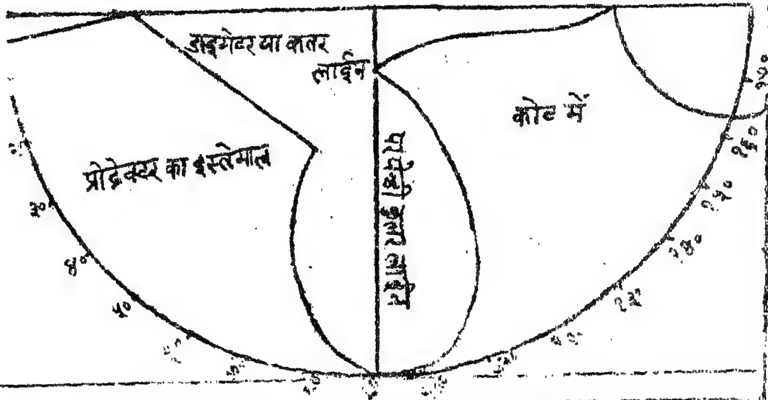

चित्र ३०
१
२
४
५


चित्र ३१
५
१
२
३
४


चित्र ३२

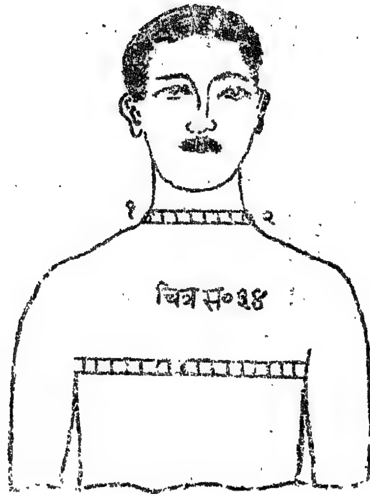

चित्र ३३
३
१
२
४

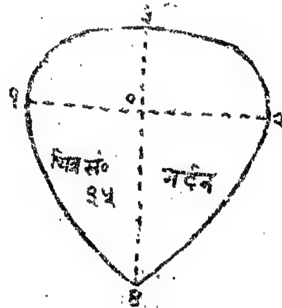
ज्योमेट्रीकल शक्लें और उनका इस्तेमाल हाई क्लास तुलबा के वास्ते



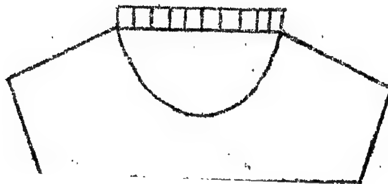
(पाई) $\pi = \frac{22}{7}$	पाई $\pi = \frac{355}{113}$	(पाई) $\pi = 3.14285$

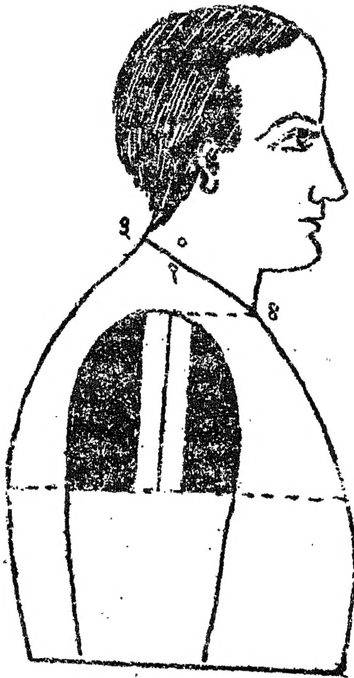
टेनजेन्ट लाईन	सैक्टर (कतआ दायरा)	सगमेन्ट	सरकल (दायरा)
डाइमेटर लाईन	रेडिअस लाईन	ओवलपस	कोआड्रा सेन्ट
मुसततील रेकटेंगल	RHOMBUS		मुसल्लस ट्राइंगल



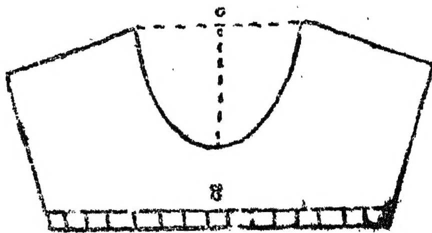


चित्र सं० ३६





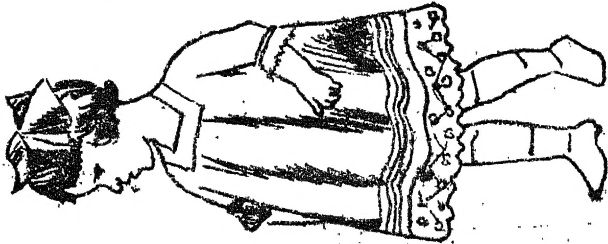
चित्र सं० २७



चित्र सं० २८

चन्द फ़ैशनएबल पिनाफ़ोर और फ़राक





Printed by Pt. Mahabir Pershad,
at the Vidya Prakash Press, Changer Road, Lahore